अध्याय 36

1.	**प्रार्थना**

समूह अगुवा. प्रार्थना के साथ अपने समूह, शिष्यों का निर्माण करने वाले इस पाठयक्रम को परमेश्वर के हाथों में सौपें।

2.	**आराधना** (20मिनट) *[शान्त समय]* **व्यवस्था विवरण 28:1-31:13**

आगे बढ़कर (या अपने नोट्स में से **पढ़**) संक्षेप में ***बताएं*** कि अपने एकान्त समय के दौरान बाइबल के निर्धारित अनुच्छेद (व्यवस्थाविवरण28:1-31:13)से क्या सीखा।
अपने अभुभव का वर्णन करने वाले जन की सुने, उसे गम्भीरता से लें तथा उसे स्वीकार करें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3.	**याद करना** (20मिनट) *[सुसमाचार]* **सुसमाचार से सम्बन्धित पदों का पुनरावलोकन**

क. याद की गयी आयतों का पुनरावलोकन करने का तरीका

पहले से याद की गयी बाइबल की आयतों का पुनरावलोकन करने के निम्नलिखित भाग हैं:

1. पुनरावलोकन करना

पुनरावलोकन करने का अर्थ है कि जिन आयतों को रोज़ आपन याद किया था उनमें से 5 को फिर से दोहराएं। आयतों को बार बार दोहराना उसे याद करने व उसको सही उच्चारण करने का सबसे बेहतर तरीका है। इसलिए आप उन 5 आयतों को आने वाले 5 सप्ताहों में दिन में कम से कम एक बार जरूर दोहराऐं जिन्हे आपने सबसे अन्त में याद किया था। इस तरीके से आप बाइबल की हर एक नयी आयत को 'पुनः दोहराव ' प्रणाली में आने से पहले 35 बार दोहरा चुके होते हैं।

2 पुनः दोहराव प्रणाली।

पुनः दोहराव प्रणाली का अर्थ है कि आप पहले याद की गयी सारी आयतों को तीन सप्ताह में एक बार जरूर दोहराते हैं। पुनः दोहराव प्रणाली आपके द्वारा याद की गयी आयतों को याद रखने का सबसे बेहतर तरीका है। अतः 100 पहले याद की गयी आयतो में से, 5 आयतों को प्रत्येक दिन दोहराएं। अतः आप पहले से याद की गयी आयतों को 3 सप्ताह में एक बार पुनः दोहराते हैं।

3. साथ ले कर चलें।

कण्ठस्थ वचनों के कार्ड होल्डर या आयतों को लिखने वाली कॉपी को साथ में रखें। यात्रा के समय, या दिन में खाली समय को आयतें दोहराने, मनन करने तथा प्रार्थना करने के लिए इस्तेमाल करें। पहले याद की गयी 5 आयतों को फिर से दोहराएं। जिन आयतों को आपने पहले दोहराया था उन्हें फिर से दोहराएं। आयतों में लिखी बातों पर मनन करें तथा उसके अनुसार प्रार्थना करें।

4. मूल्यांकन करें।

एक दूसरे से यह जानने के लिए पूछें कि क्या अभी भी आप याद की गयी आयत को ठीक तरह से जानते हैं।
सामुहिक सभाओं के दौरान लोगों को दो-दो के समूह में बांट दें और आपस में एक दूसरे द्वारा सबसे आखिर में याद की गयी आयतों को जांचें। इसके अलावा कभी कभी,दो दो के समूह में बंटकर पहले याद की गयी 5 बाइबल की आयतों की श्रृंखला की भी जांच करें। एक दूसरे के साथ मिलकर जांचे कि क्या आपको उस आयत को शीर्षक, हवाला या बिना किसी गलती के वह पूरी आयत याद ह। सकेंतक के रूप में, कभी आप शीर्षक, कभी हवाले या कभी बाइबल की आयत के पहले कुछ शब्द बता सकते हैं।

ख. "सुसमाचार" की श्रृंखला को दो दो लोग मिलकर दोहराएं

1. पाप का स्वभाव। रोमियों 3:23 2. पाप का दण्ड। सभोपदेशक 12:14 3. पाप का प्रायश्चित। रोमियों 5:8	4.उद्धार एक उपहार है। इफिसियों 2:8-9 5: विश्वास के द्वारा उद्धार

4	**बाइबल अध्ययन** (70मिनट) *[कलीसिया]* **मसीहियों का जीवन तथा देह के रूप में कार्य : 1कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28**

बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों का इस्तेमाल करते हुए 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 को मिलकर पढ़ें।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये हम मिलकर 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 को एक साथ **पढ़ें।**
आइये हम बारी-बारी से निर्धारित सभी वचनों को पढ़ें।

कदम 2 खोजें **निरीक्षण**

ध्यान दें। **इस अनुच्छेद में कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?**
या इस अनुच्छेद के किस सत्य ने आपके हृदय या मन को छुआ?
लेखा रखें। एक या दो बातों की गहन पड़ताल करें, जो आपको समझ आयी हों। उन पर सोच विचार करें तथा अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
बाँटे। (समूह के सदस्यों द्वारा दो मिनट विचार करने तथा उन विचारों को लिखने के बाद, उन विचारों को बारी बारी आपस में बाँटें) आइयें हम आपस में बारी बारी बाँटे कि हमें क्या प्राप्त हुआ है।
(लोगों द्वारा खोजी गयी बातों को बांटने के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है। याद रखें के प्रत्येक लघु समूह के लोग अलग बातों को बाँट सकते हैं, यह ज़रूरी नहीं है कि सभी सदस्यों द्वारा बाँटे गयें विचार एक ही समान हों।

12:4-7,12-26

खोज 1. मण्डली और सार्वभौमिक कलीसिया को किस प्रकार से कार्य करना चाहिए।

पौलुस कलीसिया के सदस्यों के कामों को समझाने के लिए शरीर के अंगों के कार्यों का उदाहरण देता है। बाइबल हमें कलीसिया के कार्यों के सन्दर्भ में तीन मुख्य कार्यों के बारे में बताती है।

(1) मण्डली और सार्वभौमिक कलीसिया को मसीह में होकर उद्धार का सुसमाचार प्रचार करना चाहिए।

यीशु मसीह पर विश्वास किये बिना किसी का उद्धार नहीं होगा। यीशु ने कहा,"यदि तुम नये सिरे जन्म न लो, तो तुम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते" (यूहन्ना 3:3,5)। जबकि पौलुस कहता है, कोइ भी व्यक्ति केवल पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने पर ही कलीसिया का सदस्य बन सकता है, अर्थात जब वह व्यक्ति नया जन्म पा लेता है(1 कुरिन्थियों 12:13)। कोई भी जन अपने परिजनों के मसीही होने की वजह से मसीही व्यक्ति बन कर पैदा नहीं होता। हर एक जन को नया जन्म पाना जरूरी है (यूहन्ना 3:3-8)। उसके नाम में विश्वास करने का अर्थ है कि आप यीशु मसीह पर विश्वास करें जैसा कि उसने अपने आप को बाइबल में प्रगट किया था, और यीशु मसीह को अपने हृदय में ग्रहण करने (स्वागत करने) से उस व्यक्ति को परमेश्वर द्वारा नया जन्म पायी हुई सन्तान बनने का अधिकार प्राप्त हो जाता है (यूहन्ना 1:12-13)। और विश्वास सुसमाचार सुनने से उत्पन्न होता है (रोमियों 10:14-17)। इसी कारण सुसमाचार का प्रचार होना बहुत जरूरी है।

(2) मण्डली और सार्वभौमिक कलीसियाओं ने विविधता को स्वीकार करना चाहिए।

हालांकि मसीह की एक ही देह है(एक सार्वभौमिक कलीसिया), लेकिन उसके बहुत से अंग हैं। यह एक देह बहुत से अंगों अर्थात बहुत सी भाषाओं, लोगों और जातियों से मिलकर बने हैं(प्रकाशितवाक्य 5:9)। और ये अंग आत्मिक वरदानों के सन्दर्भ में सभी एक दूसरे से अलग होते हैं, वे अलग अलग प्रकार की सेवा करने के लिए बुलाए गये हैं और पवित्र आत्मा सार्वभौमिक कलीसिया व स्थानीय मण्डलियों में अपने कार्यों को भी अलग अलग तरीके से प्रगट करता है।

उदाहरण के लिए, एक मसीही जन को शिक्षा देने का आत्मिक वरदान प्राप्त हो सकता है:उसे बच्चों के शिक्षक के रूप में बुलाया गया होता है और वह अपनी शिक्षा देने की योग्यता को दृष्टान्त व बाइबल की अच्छी कहानियां सुनाने के लिए इस्तेमाल करता है। दूसरे मसीही को भी एक शिक्षा देने का आत्मिक वरदान मिला है; उसे व्यस्क लोगों को शिक्षा देने के लिए बुलाया गया होता है, जो अपनी योग्यता को व्यस्कों के बीच में बाइबल अध्ययन लेने के द्वारा प्रगट करता है। कलीसिया में लोगों को दिये गये सेवा के क्षेत्र भी अलग अलग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, दया के आत्मिक वरदान के साथ एक मसीही जन को मण्डली के गरीब सदस्यों पर दया करने के लिए नियुक्त किया गया हो। जबकि हो सकता है कि दूसरे मसीही को उसी आत्मिक वरदान के साथ समाज के नेत्रहीन व विक्लांग लोगों की सेवा करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी हो।

एक सार्वभौमिक कलीसिया व स्थानीय मण्डली की विशेषता एकसमानता नहीं परन्तु विविधता है। एकसमानता का अर्थ है कि सभी सदस्य मण्डली में एक ही तरह से व्यवहार करने तथा समान गतिविधियों को करने के लिए बाध्य हैं। एकसमानता की वजह से मण्डली में फूट, क्लेश व झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं, क्योंकि विभिन्न प्रकार के आत्मिक वरदान प्राप्त किये हुए लोगों को उस स्थान में काम करने के पर्याप्त अवसर प्राप्त नहीं हो पाते हैं। लेकिन विविधता की वजह से अटूट एकता का निर्माण हो सकता है, क्योंकि हर एक मसीही की सेवा की जरूरत है और हर एक विश्वासियों को भी एक दूसरे की सेवाओं की जरूरत पड़ती है। सार्वभौमिक या स्थानीय कलीसियाएं, अगर सारे सदस्य अपने यीशु मसीह अर्थात अपने सिर के निर्देशों के अनुसार चलते या कार्य करते हैं केवल तभी वे कलीसियाए वह बन सकती हैं जो वे बनना चाहती है और उन कामों को पूरा कर सकती है जो वे करना चाहती हैं।

(3) मण्डली और सार्वभौमिक कलीसिया के सदस्यों को आपस में परस्पर निर्भर होना चाहिए।

मसीह की देह में छोटे बढ़े, ऊँच नीच जैसी बातों व तुलना की कोई जगह नहीं है। आंखों को कान और हाथ को पैरों की जरूरत होती है। स्थानीय कलीसिया और सार्वभौमिक कलीसिया को काम करने के लिए सभी सदस्यों द्वारा सक्रिय रूप में कार्य करने की जरूरत होती है। हर एक सदस्य को एक दूसरे की चिन्ता करनी चाहिए। प्रत्येक सदस्यों को एक दूसरे की सेवा करनी चाहिए। और हर एक सदस्य को एक दूसरे की सेवा की जरूरत होती है। एक दूसरे की अपने आत्मिक वरदानों द्वारा सेवा करके आप उन लोगों के प्रति अपने प्रेम को भी प्रगट कर सकते हैं! जिस प्रकार से हाथ बिना पैर के कुछ नहीं कर सकता और न ही पैर बिना आंखों के आगे बढ़ सकते हैं, इसी प्रकर से मसीही की देह में भी कोई जन दूसरे आत्मिक वरदानों की सहायता के बिना कोई सेवा का कार्य नहीं कर सकते हैं। हर एक जन की सेवा और उनके वरदान दूसरे की सेवा व आत्मिक वरदानों के लिए पूरक हैं। इस तरह से, स्थानीय व सार्वभौमिक कलीसियाएं बेहतर ढंग से मज़बूत बन रही हैं। अत: हर एक मसीही को दूसरों में सुसमाचार को सुनाने, परमेश्वर द्वारा मिले आत्मिक वरदान द्वारा दूसरों की सेवा करने तथा दूसरों को भी उनके वरदानों द्वारा सेवा करने का मौका देने का प्रयास करना चाहिए।

12:28

खोज 2. स्थानीय व सार्वभौमिक कलीसियाओं में महत्वपूर्ण आत्मिक वरदान।

वह कहता है,"परमेश्वर ने कलीसिया में,बहुतों को पहले प्रेरित, दूसरों को भाविष्यद्वक्ता और तीसरा शिक्षक....करके नियुक्त किया है"। इस पत्री में, प्रेरित पौलुस हमें सिखाते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण आत्मिक वरदान प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक हैं। इफिसियों की पत्रो 4:11 में वह सिखात है कि सबसे महत्वपूर्ण वरदान प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, प्रचारक, पासबान और शिक्षक हैं। मसीह के प्रेरित(इफिसियों 1:1; 2:20; 3:5; 4:11) चेलों का एक अनोखा समूह था, जिन्हें स्वयं यीशु ने चुना और बुलाया और प्रशिक्षित किया था, और जो उसकी मृत्यु और पुररूत्थान के गवाह थे। पौलुस भी इस समूह का एक हिस्सा था। अब उस प्रकार के प्रेरित अब विद्यमान नहीं हैं। लेकिन, कलीसिया के प्रेरित वे मसीही हैं(प्रेरित 14:4; 2कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25; 1 थिस्लुनिकियों 2:6-7), जिन्हें कोई कलीसिया चुनती और नये स्थानों में मण्डलियों का निर्माण करने के लिए बाहर भेजती है। वर्तमान में हम इस प्रकार के लोगों को मिश्नरी, चर्च प्लान्टर और चर्च बनाने वाले कहते हैं।

पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता वे लोग हुआ करते थे जो परमेश्वर की बातों को बोलते तथा परमेश्वर प्रगट किये गये संदेशों को लोगों के सामने प्रस्तुत किया करते थे। वे कह सकते थे,"यहोवा परमेश्वर ऐसा कहता है" और उनकी बातें बाइबल में लिखित हैं। वे भी बिल्कुल अनोखा समूह थे। आज के ज़माने में उस प्रकार के भविष्यद्वक्ता नहीं पाये जाते। लेकिन नये नियम में भविष्यद्वक्ताओं के पास, भविष्यद्वाणी करने का वरदान है, वे बाइबल की बातों को पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर प्रचार करते और लोगों के हृदय को छूते हैं। आज हम ऐसे लोगों को प्रचारक कहते हैं।

निष्कर्ष। बाइबल की शिक्षाओं के अनुसार, सार्वभौमिक कलीसिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वरदान मिश्नरी,भविष्यद्वक्ता, प्रचारक, पासबान व शिक्षक हैं। ये सारे वरदान स्थानीय मण्डलियों में भी विद्यमान हो सकते हैं। उनमें केवल कोई विशेष योग्यता ही नहीं पायी जाती(जैसे की शिक्षा प्रदान करना),लेकिन उन्हे एक विशेष कार्यालय (अर्थात शिक्षक) दिया गया है, लेकिन निश्चय ही इस कार्यालय को कलीसिया के प्राचीनों की अधीनता में काम करना चाहिए। 1कुरिन्थियों 12:31 में, पौलुस कहता है कि जिन लोगों को पवित्र आत्मा ने वरदान दिये हैं,उन्हें परमेश्वर से लगन के साथ और भी बढ़े वरदान प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए अर्थात ऐसे वरदान जो परमेश्वर के संदेश को शब्दों में बयान करते हैं, जो सबके द्वारा समझा जाता हो (1 कुरिन्थियों 14:19)और जिसके द्वारा लोगों को शक्ति,प्रोत्साहन व विश्राम प्राप्त होता है। पौलुस ऐसे वरदानों को "महान वरदान" कहता है।

कदम 3 प्रश्न	व्याख्या

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद क आधार पर किस विषय पर प्रश्न पूछना पसन्द करेंगे?

आईये, हम 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं आर फिर भी जो बातें समझ न आएं उनके लिए प्रश्न पूछे।

लेखा लें: सबसे पहले एक स्पष्ट प्रश्न को तैयार कर लें। फिर उस प्रश्न को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

बाटे (समूह द्वारा दो मिनट तक सोच विचार करने तथा अपने विचार लिखने के पश्चात, प्रत्येक सदस्य अपने प्रश्न को अन्य सदस्यों के साथ बांटे)

चर्चा करें: (इसके पश्चात कुछ प्रश्नों का चुनाव करने के बाद, समूह में चर्चा करने के द्वारा उन प्रश्नों का जवाब देने का प्रयास करें। (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले सम्भावित प्रश्नों व चर्चाओं के उदहारण दिए गये है)

12:4-7

प्रश्न1. आत्मिक वरदानों का स्वभाव क्या है?

ध्यान दें। आत्मिक वरदान शिक्षा देने या किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करने की विशेष योग्यता है। यह मसीहियों के द्वारा परमेश्वर की सामर्थ और उसके ज्ञान का प्रगटीकरण है जो अनेक प्रकार की सेवाओं में प्रगट होता है। यह मसीहियों की देखभाल द्वारा अन्य तरीकों से प्रगट होने वाला परमेश्वर का अनुग्रह है (1 पतरस 4:10)। यह हमेशा एक वरदान या उपहार मसीहियों की अपनी मेहनत का नतीजा नहीं। इस वरदान की परिमाप है, यह मसीह के द्वारा ठहराई गयी सीमा के आधार पर सीमित होता है (इफिसियों 4:7)।

12: 8-10,28

प्रश्न 2. नये नियन में किस प्रकार के आत्मिक वरदानों की चर्चा की गयी है?

ध्यान दें। बाइबल में दी गयी वरदानों की सूची (रोमियो 12:4-8; 1 कुरिन्थियों 7:1,7; 1 कुरिन्थियों 12:8-10; 1कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 4:11 और 1 पतरस 4:10-11) हमें थकाने की मनसा से नहीं दी गयी है। वे कलीसिया में सामान्य वरदानों के बारे में बताते हैं, लेकिन यहां पर अभिप्राय यह है कि वरदान और भी प्रकार के हैं जिनका जिक्र बाइबल में नहीं किया गया है। रचनात्मक व संगीत सम्बन्धी वरदानों पर भी ध्यान दें (निर्गमन 28:3, 31:1-6; 35:10,25,35;36:1; भजन 33:2-3; 45:1; 78: 72)। इसके हर एक वरदान के कार्य करने के अपने बहुत से तरीके हैं। उदाहरण के लिए, बहुत प्रकार के शिक्षा देने वाले वरदान है, जैसे मण्डली के व्यस्कों को शिक्षा देना, या बच्चों के समूह को शिक्षा देना,या विकलांग लागों को शिक्षा देना, इत्यादि।

प्रश्न 3. आत्मिक वरदानों के चार मुख्य उददेश्य क्या हैं?

ध्यान दें। आत्मिक वरदानों को चार विभिन्न उददेश्य निन्नलिखित है।

- एक दूसरे की सेवा करना (1 पतरस 4:10-11)
- स्थानीय व सार्वभौमिक कलीसिया की उन्नति करना (1 कुरिन्थियों 14:12)
- सेवा के लिए मसीहियों को तैयार करना (इफिसियों 4:11-13)
- आत्मिक वरदान का सबसे बढ़ा लक्ष्य सारी बातों में परमेश्वर की महिमा करना है (1 पतरस 4:11)!

12:11

प्रश्न 4. कौन इस बात का अन्तिम फैसला करता है कि आप कौन सा आत्मिक वरदान प्राप्त करेगें?

ध्यान दें। त्रीएक परमेश्वर (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) अनुग्रहकारी व श्रेष्ठ तरीके से मसीहियों को आत्मिक वरदान प्रदान करता तथा कलीसिया में विशेष कार्यो को नियुक्त करता है (1 कुरिन्थियों 12:11,18,28; इफिसियों 4:7; 1 पतरस 4:10)। हालांकि मसीहियों को, जिन्हें पवित्र आत्मक ने आत्मिक वरदान दिये हैं, उन्हें बढ़े से बढ़े आत्मिक वरदान प्राप्त करने और उन्हे कलीसिया की बढ़ौतरी के लिए इस्तेमाल करने हेतू प्रोत्साहित किया गया है, लेकिन त्रीएक परमेश्वर ही है जो निर्धारित करते हैं कि किसको कौन सा आत्मिक वरदान मिलता है। परमेश्वर ही अपनी इच्छा के अनुसार देह में मसीहियों के स्थान को निर्धारित करते, उन्हें विशेष कार्य और आत्मिक वरदान देते हैं।

प्रश्न 5. मसीही लोग किस तरह से अपने आत्मिक वरदान की खोज करते हैं?

ध्यान दें।

बाइबल पढ़कर व प्रार्थना करके।

आत्मिक वरदानों, उनकी विशेषताओं और उनके कार्यों के बारे में बाइबल आधारित शिक्षाओं को समझें। उसके बाद आप परमेश्वर से आप पर यह प्रगट करने के लिए प्रार्थना करें कि क्या उसने आपको कोई आत्मिक वरदान दिया है, और यदि हां, तो उसने अपने अनुग्रह और श्रेष्ठतम तरीके से कौन सा वरदान आपको दिया है।

कलीसिया में सेवा करने के द्वारा।

कलीसिया में होने वाली विभिन्न प्रकार की सेवाओं में शामिल हों, जैसे बच्चों को शिक्षा देना,जवानों की अगुवाई करना,असहायों की दया करना, समस्याओं में फँसे लोगों को प्रोत्साहित करना, सुसमाचार प्रचार करना इत्यादि। दूसरों की सेवा करके, या स्थानीय कलीसिया या सार्वभौमिक कलीसिया की उन्नति में सहायता करके, आपके आत्मिक वरदान या योग्यताएं प्रगट होना शुरू हो जाएंगी। परमेश्वर हमें आत्मिक वरदान इसलिए नहीं प्रदान करते ताकि हम उनके बारे में लोगों के सामने डींगे मारते रहें, परन्तु ये वरदान हमें दूसरों की सेवा करने के लिए दिये गये हैं। जो मसीही लोग सेवा नहीं करते, वे कभी भी अपने भीतर आत्मिक वरदानों को खोज नहीं सकते।

अपनी सेवा का मूल्यांकन करने के द्वारा

एक आत्मिक वरदान एक ऐसी योग्यता है जो आपको उस विशेष क्षेत्र में सेवा करने के लिए उकसाती है। आपके भीतर अपने आप उस क्षेत्र में सेवा करने की इच्छा उत्पन्न होने लगती है। क्योंकि आत्मिक वरदानों को दूसरों की सेवा करने व कलीसिया की उन्नति करने से अलग नहीं किया जा सकता, इसलिए दूसरों पर आपकी सेवा का पड़ने वाला असर ही आपके वरदान का अच्छा संकेत है। आप अपने आपसे यह प्रश्न करें,"दूसरे मसीही लोग मेरी सेवा के बारे में क्या कहते हैं?" "दूसरे लोग ज्यादातर मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?" " उनके विचार से मैं कौन सा काम बेहतर कर सकता हूँ?" "दूसरों के हिसाब से मरे क्या करने से उनको ज्यादा फायदा हुआ?" तब आप अपने आप से पूछें,"मैं स्वयं अपनी सेवा के बारे में क्या कहता हूँ?" "मुझे क्या काम करने में सबसे ज्यादा मज़ा आता है?" " किन कामों को करने में मुझे महारथ हासिल है?" "मेरे किन कामों के द्वारा दूसरों की उन्नति होती है?"

12:4-7,14-27

प्रश्न 6. एक मसीही जन को स्थानीय कलीसिया और सार्वभौमिक कलीसिया में किस प्रकार से देखना चाहिए?

पढ़ें रोमियों 12:3-6; 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 14-27

परमेश्वर विविधताओं को ठहराता है।

मसीहियों में बहुत प्रकार के लोग पाये जाते हैं, जिन्हें स्वयं परमेश्वर ने अपनी महान योजना के अनुसार अपने अनुग्रह के द्वारा ठहराया है। विश्वास की परिमाप, मसीह की देह में कार्य,आत्मिक वरदान और जो वरदान परमेश्वर हर एक व्यक्ति को देता है

वह अलग होते हैं। परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार मसीहियों में पायी जाने वाली विविधता का लेखा लेता है और फिर हर एक के जीवन की दिशा को निर्धारित करता है।

परमेश्वर दीन जन पर अनुग्रह करता है।

"अगर कोई अपने बारे में जितना सोचना चाहिए उससे बढ़कर सोचता है" तो वह घमण्ड है। घमण्ड क अर्न्तगत डाह करना या उस विशेषाधिकार का इस्तेमाल करना आता है जो उसका नहीं है। किसी भी जन का आत्म सम्मान पाने से परहेज नहीं होता। एक मसीही जो ऊँचे पद या मण्डली में परमेश्वर द्वारा उसे दिये गये काम को तुच्छ जानते हुए दूसरे के आत्मिक वरदान के प्रति डाह करता है, वह असल में अपनी बढ़ाई चाहने वाला व्यक्ति है। नम्रता को अर्थ "सुबुद्धि के साथ अपने आपको समझना है" (रोमियो 12:3-6)। मसीहियों को उन वरदानों के बारे में यह नहीं सोचना चाहिए कि उनके पास वे भी वरदान हैं, जो वास्तव में उनके पास नहीं हैं और न ही जिन वरदानों को परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से उन्हें दिया है उसे स्वीकार करने या पहिचानने से इनकार करना चाहिए। अपने आप की बढ़ाई करना और झूठी नम्रता का दिखावा करना दोनों ही गलत हैं।

परमेश्वर नम्र व दीन पर अनुग्रह करता है(1 पतरस 5:5-6)।

परमेश्वर ही हर एक मसीही के लिए विश्वास का परिमाण निर्धारित करते हैं।

"जिस परिमाण से परमेश्वर ने हर एक को बांट दिया है" (रोमियों 12:3)यह वाक्य विश्वास की किस्म को दर्शाता है न कि उसकी गिनती को। अनेक प्रकार की "विश्वास की परिमाण" उन विभिन्न तरीकों को दशाती है जिनके तहत मसीहियों का विश्वास (पहिचान, भरोसा व आज्ञाकारिता) आत्मिक वरदानों की विविधता, कार्य और स्थानीय व सार्वभौमिक कलीसिया में पाये जाने वाले कार्यालय के सन्दर्भ में होकर अभ्यास किया जाना चाहिए। परमेश्वर के महान अनुग्रह के अनुसार, हर एक मसीही को उसकी विश्वास की परिमाण दी जाती है। अर्थात मसीह की देह का एक भाग होने के कारण,वह आत्मिक वरदान (कार्य या कार्यालय) और स्थानीय व सार्वभौमिक कलीसिया में अपना उचित स्थान प्राप्त करता है। इसके साथ ही साथ वह पर्याप्त विश्वास(पहिचान, भरोसा और आज्ञाकारिता) (फिलिप्पियों 1:29) जिसके द्वारा और जिसके दायरे में होकर उसे अपने आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल करना चाहिए। सारे आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल केवल विश्वास और प्रेम के द्वारा ही किया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 13)। अत: हर आत्मिक वरदान के कार्य करने के तरीकों व इस्तेमाल किया जाने वाले क्षेत्र की अपनी एक सीमित सीमा होती है।

प्रश्न 7. आत्मा के वरदान और आत्मा के फल में क्या अन्तर है?

ध्यान दें। पवित्र आत्मा द्वारा दिये जाने वाले आत्मिक वरदान प्राप्त करना, आत्मिक या परिपक्व होने का प्रमाण नहीं है। 1 कुरिन्थियों 1:7 व 3:1, कुरिन्थियों की कलीसिया में सभी प्रकार के आत्मिक वरदान सक्रिय थे, फिर भी उनकी कलीसिया आत्मिक या परिपक्व नहीं थी, वरन सांसारिक तथा मसीह में बच्ची थी।

और 1कुरिन्थियों 13:1 के अनुसार, दूसरे मसीहियों के प्रति प्रेम के बिना आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल परमेश्वर की दृष्टि में बिल्कुल बेकार है। पवित्र आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करने, पवित्र आत्मा द्वारा चलाये चलने, पवित्र आत्मा द्वारा नियन्त्रित हान का प्रमाण पवित्र आत्मा द्वारा दिये गये वरदानों का इस्तेमाल करना नहीं,वरन आपके जीवन में आत्मा के फलों का प्रगट होना है। और आत्मा के फल प्रेम,आनन्द,शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है(गलातियों 5:22-23)।

कदम 4. उपयोग इस्तेमाल

ध्यान दे: इस अनुच्छेद में प्राप्त सच्चाईयों में से मसीही लोग सम्भवत: किन का इस्तेमाल कर सकते हैं?

बांटे व लेखा रखें: आईये हम 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 के आधार पर एक दूसरें के साथ विचार विर्मश करें, और जो कार्य सम्भव है उनकी सूचि बनाएं।

ध्यान दें: किस सच्चाई के विषय में परमेश्वर चाहते हैं कि आप सम्भवत: उसे अपने निज जीवन में प्रयोग करें?

लिखें: इस अभ्यास को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को नि:संकोच दूसरों के साथ बाँटे। (याद रखें कि प्रत्येक समूह भिन्न सत्य का प्रयोग करेगा, और हो सकता है कि वह एक ही सच्चाई को अलग तरीके से इस्तेमाल करं। सम्भावित प्रयोगों की सूची निम्नलिखित है)

1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 से उपयोग की जाने वाली सम्भावित बातें।

12:12. इस बात को ध्यान में रखें कि मसीह की देह का हिस्सा होने के कारण आप देह से अलग होकर कुछ भी नहीं कर सकते हैं। हर एक मसीही केवल कलीसिया का एक भाग होकर ही कार्य कर सकता है। (देखें मैनुएल 3, परिशिष्ट 3)

12:13 विश्वास करें कि केवल पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म पाने पर ही एक व्यक्ति मसीह की देह का वास्तव में एक अंग बन सकता है।

12:15 अपने बारे में कभी निम्न व छोटी बातें न सोचें। मसीह की देह के एक अंग होने के नाते आप मसीह की देह के दूसरे लोगों के लिए अति महत्वपूण और आवश्यक जन हैं।

12:18 मसीह की देह में आपके लिए परमेश्वर द्वारा ठहराये गये स्थान को स्वीकार करें।

12:21 अपने बारे में जरूरत से ज्यादा ख्यालों में न डूबे रहें। मसीह की देह का एक अंग होने के नाते आपके लिए मसीह की देह के दूसरे अंगों का काम करना भी जरूरी है। आपके मसीही जीवन के लिए दूसरे सदस्य भी जरूरी हैं।

12:25 इस बात का ध्यान रखें कि परमेश्वर ने मसीह की देह में अंगों को इस प्रकार से व्यवस्थित किया है कि सभी अंगों को एक दूसरे का बराबर ख्याल रहे।

12:26 विचार करें कि क्या कुछ सदस्य ऐसे हैं जिनके दु:खों में आपको उनका सहभागी होना चाहिए या उनके साथ आपको आनन्द मनाना चाहिए।

12:28. हमेशा याद रखें कि परमेश्वर ही है जो स्थानीय व सार्वभौमिक कलीसियाओं में विभिन्न प्रकार के आत्मिक वरदान व नियुक्ति प्रदान करता ह (1 कुरिन्थियों 12:11; इफिसियों 4:7)

2. 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 में पाये जाने वाले व्यक्तिगत तौर पर इस्तेमाल किये जाने वाले तत्वों के उदाहरण।

मसीह की देह में स्थान व जिम्मेदारी देने के लिए मैं परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहता हूँ। यह जानकर बहुत खुशी होती है कि दूसरे सदस्यों को मेरी और मुझे दूसरे सदस्यों के सहयोग की जरूरत है। मसीह की देह में सभी अंग आवश्यक हैं। परमेश्वर को सभी की जरूरत है और वह सभी को चाहता है।

मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ कि आत्मिक वरदान केवल प्रचार करने व शिक्षा देने जैसी विशेष योग्यताओं को नहीं वरन मण्डली में मिश्नरी, प्रचारक, सुसमाचार प्रचारक,पासबान और शिक्षक जैसे विशेष कार्यालयों या कामों को दर्शाते हं। बाइबल में ये सेवकगण कोई ऐसे कार्यालय नहीं हैं, जो प्राचीनों के साथ या उनके ऊपर किसी अधिकारी के समान खड़े हों। वरन ये यह सकेत देते हैं कि प्राचीन और मण्डली का साधारण सा सदस्य भी इन वरदानों को प्राप्त करके सेवा की जिम्मेदारी को पूरा कर सकता है। ऐसे आत्मिक वरदान प्राप्त करने वाले मसीही लोग मसीह की देह में उन लोगों से ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं है जिन्हें देह में अन्य आत्मिक वरदान मिले हों। वरन, यह बात ध्यान देने की है कि उनकी ज़िम्मेदारी मसीह की देह के दूसरे सदस्यों को तैयार करने की है ताकि कलीसिया में सेवा कार्य किये जा सके (इफिसियों 4:11-12)

कदम 5. प्रार्थना	प्रतिउत्तर
आइये हम उन सच्चाईयों के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें 1 कुरिन्थियों 12:4-7, 12-28 में सिखाई हैं। (जिन बातों को आपने अपने अध्ययन के दौरान सीखा उनका प्रार्थना के द्वारा प्रतिउत्तर दें। एक या दो वाक्यों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। याद रखें कि लोग अलग अलग समूहों में अलग मुद्दों पर प्रार्थना करेंगे।)	

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[प्रतिक्रियाएं]*
		दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन के समूह में होकर **लगातार प्रार्थना करते रहें**। एक दूसरे तथा संसार के सभी लोगों के लिए प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।

1. समर्पण : चेले बनाने का संकल्प करें। किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ 1 कुरिन्थियों 12:4-7,12-28 के आधार पर प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय: यहोशू 1-4 को पढ़ते हुए परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करें। प्रश्न पूछने वाले तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. याद करें। "सुसमाचार 1-5" श्रंखला का पुनरावलोकन करें । रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
5. चेले बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तयारी की सामग्री को शामिल करें।